Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-VII JULY 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

अध्यापक विद्यालयीन छात्रों में पर्यावरण शिक्षा संबंधित उपक्रमों का चिकित्सक अध्ययन

प्रा.सौ.जमिला शौकतअली मुल्ला
श्री. उदाजीराव ज्युनि कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
गारगोटी जि.कोल्हापूर

प्राक्कथन -

आज के युग में मानव पर्यावरण की समस्या से चिंतींत हैं। आज प्रत्येक मनुष्य के मस्तीष्क में पर्यावरण प्रदुषण एक जटील समस्या बन गयी हैं। एक तरफ मानव चाँद पर पहुंच गया हैं। तथा दुसरी तरफ उसे अपने चारों तरफ प्राकृतिक स्त्रोत समाप्त होने दिखाई पड रहे हैं। शायद मानव ने यह अनुभव कर लिया हैं। कि उसके द्वारा बनाए गये, संयंत्र , परमाणु बम तथा अन्य आधुनिक उपकरण से उसने अपने अस्तित्व को मिटाने का कार्य लिया हैं। इसके अतिरिक्त बढती हुई जनसंख्या, शहरीकरण, आधुनिकीकरण और प्राकृतिक स्त्रोंतो का विनाश होने से हम और हमारी आनेवाली पिढियों का भविष्य अंधकार में चला जाएगा। इसलिए छात्रों के व्यक्तित्व विकास में पर्यावरण संबधि मूल्यों के संस्कार होना जरुरी हैं।

अनुसंधान का महत्व -

पर्यावरण संम्बन्धि शिक्षा जन साधारण को पर्यावरण की समस्याओं और उसके संरक्षण के लिए मानवी व्यवहार का ज्ञान करा सकती हैं। हमें छात्रों को सीखाना हैं। हमारे जीवन के लिए जितनी भी चिजें आवश्यक हैं , वे एक पुरी व्यवस्था में बंधी हैं। मनुष्य पर्यावरण में सौदर्य की भी खोज करता हैं। क्योंकि सौंदर्य आकर्षण उसे प्रसन्न रखता हैं ।

हम फूल खिला सकते हैं, प्रकृति को हमे यह आश्वासन देना होगा एक बडी चुनौति सामने हैं। फूल खिलाएँ इतना भी नही हो सकता तो कम से कम इतना तो करें फूल को खिलने दें। हमारी दृष्टी से छात्रों कों पर्यावरण शिक्षा में शिक्षित करना पहला काम हैं।

समस्या विधान

" अध्यापक विद्यालयीन छात्रों में पर्यावरण शिक्षा सबंधित उपक्रमों का चिकित्साक अध्ययन "

पदोंकी संकल्पनात्मक एवं कार्यात्मक परिभाषएँ

1) अध्यापक विद्यालय -

इनमें अध्ययन करनेवाले छात्र प्राथमिक विद्यालयों में जाकर अध्यापन का कार्य करते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा -

प्राथमिक स्तर के बच्चों को पढाने की पात्रता निर्माण करनेवाली संस्था।

2) छात्र

अध्यापक विद्यालमें अध्ययन करनेवाला विद्यार्थी

कार्यात्मक परिभाषा

कला, वाणिज्य और शास्त्रशाखा से बारहवी उतीर्ण लडका तथा लडकी.

3) पर्यावरण शिक्षा-

हमारे चारों ओर का परिसर ईर्द-गिर्द का वातावरण , हमारे चारों ओर उपस्थित जीव एवं भौतिक पर्यावरण जो परस्पर क्रिया करते रहते हैं। पर्यावरण शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम हैं। जिसका प्रमुख उद्देश लोगों में पर्यावरण के प्रति लगाव बढाना है जिससे प्रकृति में संतुलन बन रहे और प्रकृतिपर निर्भर सभी घटकों

को अपनी उन्नती के लिए बढावा मिले। साथ हि मनुष्य को आरोग्य संपदा प्राप्त हो । पर्यावरण के विविध घटक उनका विश्लेषण करे । उनका एक दुसरे के साथ संबंध दर्शाने की प्रक्रिया को पर्यावरण शिक्षा कहते हैं। पर्यावरण शिक्षा एक अंग हैं। जिससे पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त किये जाए । विज्ञान तथा अध्यापन क्षेत्र की पृथक शाखा नही अपितु जीवन तक चलनेवाली शिक्षा की एकिकृत प्रक्रिया हैं।

(गोयल, एम.के. 1993)

कार्यात्मक परिभाषा

शाब्दिक रुप से पर्यावरण शिक्षा दो शब्दों से मिलकर बना हैं। पर्यावरण तथा शिक्षा । इस दृष्टी से पर्यावरण शिक्षा का शाब्दिक अर्थ पर्यावरण संबंधी जागरुकता, जानकारी और समझ उत्पन्न करने की प्रक्रिया से हैं।

3) उपक्रम

उपक्रम याने ऐसा कार्यक्रम जिसमें सभी को मिलजुलकर कार्य करना होता हैं। ऐसे विभिन्न उपक्रम` विद्यालयों का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। छात्रों के सर्वागीण विकास में महत्व पुर्ण भूमिका निभाते हैं। कक्षा ले अनुभवों को सत्य उतारने के लिए उपक्रमों का आयोजन आवश्यक हैं।

कार्यात्मक परिभाषा

पर्यावरण शिक्षा के लिए विभिन्न उपक्रमोंका आयोजन किया जा सकता हैं। इन उपक्रमों के अंतर्गत छात्र अध्यापक समाज का सहयोग लिया जा सकता हैं। उपक्रमों के आयोजन से पर्यावरण शिक्षा में रुची बढा सकते हैं।

4) चिकित्सक अध्ययन

चिकित्सक अध्ययन याने सूक्ष्म विस्तृत और समीक्षत्मक अभ्यास । यह एक ऐसा अध्ययन हैं। जो गुणदोष दिखाकर उनके निराकरण के लिए उपाय योजना सुझाने के लिए उपयुक्त सिद्ध होता है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत अनुसंधान में चिकित्सक अध्ययन के अंतर्गत पाठशालाओ में आयोजित उपक्रमों की संपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती हैं।

अनुंधान के उद्देश

1) अध्यापक विद्यालयीन छात्रोंमें पर्यावरण शिक्षा संबंधी आयोजित उपक्रमों की जाँच करना।
2) अध्यापक विद्यालयीन में पर्यावरण शिक्षा संबंधी उपक्रमों के आयोजन में अध्यापको को आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना ।
3) अध्यापक विद्यालय में आयोजित पर्यावरण शिक्षा संबंधित उपक्रमों का छात्रों कें पर्यावरण जागृतीपर होणे वाले परिणाम अध्ययन करना ।
4) पर्यावरण जागृती और पर्यावरण अध्ययन निष्पती हेतु उपक्रम सुचित करना।

अनुसंधान की परिकल्पना

1) अध्यापक विद्यालयीन छात्रों में पर्यावरण शिक्षा संबंधी आयोजित उपक्रमों में सार्थक अंतर नही होता।
2) अध्यापक विद्यालय में पर्यावरण शिक्षा सबंधि उपक्रमों के आयोजनमें अध्यापकों को आनेवाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं होता।
3) अध्यापक विद्यालय में आयोजित पर्यावरण संबधीत उपक्रमों का छात्रो के पर्यायवरण जागृतीपर होने वाले परिणाम में सार्थक फरक नहीं होता।

अनुसंधान संबंधित साहित्य

अनुसंधान कर्ता ने पुर्व अनुसंधान की जानकारी ली हैं। इसमें किताबें पत्र पत्रिकाएँ , इंटरनेट तथा पूर्व अनुसंधान का पुर्ननिरिक्षण किया है।

1) पटेल दिलीप यु

गुजरात राज्य मे डंग जिले के प्राथमिक शिक्षा अध्यापकों की पर्यावरण जाणीव जागृती का अभ्यास ।
पी एच.डी. गुजरात

2) मिलेगांवकर एस.डी.

माध्यमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरण जाणीव जागृती का चिकित्सक अध्ययन
पी.एच.डी. शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर

3) धनवडे एस.ए.

Enviromental Sesitivity Among IX Students - A Study कक्षा नौवी के छात्रों में पर्यावरण संवेदन शीलता - एक अभ्यास
पी.एच.डी. शिवाजी विश्व विद्यालय कोल्हापूर

4) नागरा , विपिंदर (2007)

Envionmental Education Awareness Among School Teacher
अध्यापकों में पर्यावरण शिक्षा संबंधी जाणीव जागृती का अध्ययन

अनुसंधान कार्यपद्धति

अनुसंधान कर्ताने अनुसंधान के लिए सर्वेक्षण पद्धती का चयन किया हैं। प्रस्तुत अनुसंधान के लिए अध्यापक प्रश्नावली, प्रधानाचार्य प्रश्नावली छात्रों के लिए पर्यावरण जाणीव जागृती, पाठशाला निरिक्षण सूची इन साधनों की जानकारी दी हैं।

अनुसंधान - सामग्री विश्लेषण एवं अर्थ निर्वेचन

संकलित प्रदत्तो का विश्लेषण तथा अर्थनिर्वचन किया गया हैं। उचित सांखिकीय मापो का विश्लेषण के लिए प्रयोग करते हुए अनुसंधान की उपलब्धियाँ दि हैं।

अनुसंधान के निष्कर्ष

1) पर्यावरण शिक्षा का अध्यापन करनेवाले अध्यापकों को कम मात्रा में प्रशिक्षण मिलता हैं।
2) पर्यावरण उपक्रमों के आयोजन में समाज का सहयोग नही मिलता ।
3) अधिकतर पाठशाला में स्वच्छ एवं सुंदर परिसर दिखाई देता हैं।
4) कईशालाओं में वृक्षारोपन किया जाता हैं।
5) पर्यावरण संबंधि स्लोगन, सुविचार पाठशालाओं मे लिखे हैं।
6) पर्यावरण रक्षा करने की जाणीव जागृती कम दिखाई देती हैं।

अनुसंधान के सुझाव -

1) वृक्षारोपन करने के लिए सरकारदवारा जगह उपलब्ध करानी चाहिए ।
2) विद्यालयों के अच्छे उपक्रमों को प्रसिद्ध करना चाहिए ।
3) पर्यावरण संबंधी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए।
4) तज्ज्ञ व्यक्तियों के व्याख्यान का आयोजन , पर्यावरण फिल्म दिखाना चाहिए।
5) वृक्षरोपन कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।

समारोप

आज के छात्रों को भविष्य में देश के कर्तव्यों कें बारे में जागृत करना शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य हैं। शिक्षा के माध्यम से उनमें पर्यावरणीय मुल्यों का विकास करणे के लिए उपक्रमो का आयोजन किया जाना आज

की बदलीत हुई सामाजिक स्थिती में वही महत्वपूर्ण बात हैं। विज्ञान के आधारपर भौतिकता की ओर झुककर प्रकृति के प्रति प्रेमभाव का निर्माण होना निहायत जरुरी हैं।

आज आधुनिक कालमें पर्यावरण का प्रदुषण एक सीमा पर पहुँच गया हैं। कुछ उपायों के दवारा आनेवाले संकट से बचा लिया जाए कोई भी राष्ट्र बहुमुखी विकास कर सकता हैं। जबकी पर्यावरण 'सुजलाम सुफलाम' हो इसलिए आज शिक्षा को अध्यापक विद्यालयों के स्तर पर अधिक बल देना आवश्यक हैं । इसलिए इस आयु में बालक में पर्यावरण शिक्षा के प्रति लगाव लगाने से वह उसमें प्रगती कर सकते हैं ।

संदर्भ सूची

1) मूल्य शिक्षा - लेखक डॉ. इ.एन, गावंडे आुवादक - एन. जी. पवार

2) सोनी राम गोपाल " गोपाळ अध्यापक शिक्षा " - आगरा पब्लीकेशन

3) वास्तव डी,एन . " आुसंधाा विधियॉ"- आगरा - साहित्य प्रकाशा

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com